भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान

अशोक प्रसाद मेहता*

अंग्रेजों से पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति ग्रामीण थी तथा व्यवस्था अविकसित थी। गाँव एक पृथक इकाई थी तथा व्यवसाय वंशानुगत था। यहाँ का प्रमुख व्यवसाय कृषि था, लेकिन उद्योग के क्षेत्र में भी यह उन्नत था। भारत द्वारा उत्पादित रेशमी एवं सूती वस्त्र विश्व में उत्तम क्वालिटी के माने जाते थे। यहाँ संगमरमर का कार्य, नक्काशी का कार्य, सोने–चाँदी के आभूषण एवं पत्थर पर तराशी कार्य बहुत ही उत्तम किस्म का होता था। निर्यात की वस्तुओं में नील अफीम एवं मसाले भी शामिल थी। इस प्रकार 17वीं एवं 18वीं शताब्दियों तक भारतीय अर्थव्यवस्था अपने परम्परागत स्वरूप में गतिमान रही।

भारतीय अर्थव्यवस्था में अर्थ उन सभी खेतों, कारखानों, दुकानों एवं खानों, बैंको, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, अस्पताल आदि से है, जो लोगों को राजेगार देते है तथा वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करते है और उन वस्तुओं एवं सेवाओं का उपयोग इस देश के लोग करते है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था, पिछड़ी, अल्पविकसित गतिहीन एवं सुस्त अर्थव्यवस्था थी। किसी भी देश का विकास उस देश की कृषि एवं उद्योगों पर आधारित होता है। कृषि के लिए शक्ति, साख, परिवहन आदि चाहिए तो उद्योगों के मशीनरी, विपणन सुविधा, परिवहन संदेशवाहन आदि यदि कोई देश तेजी से विकास करना चाहता है तो से इस आधारभूत ढ़ाँचे का विकास अपने देश में तेजी से करना होगा।

स्वतन्त्रता के समय उपरोक्त सभी आधारभूत ढ़ाँचे की कमी थी। कोयले का उत्पादन तो हो रहा था, लेकिन तेल गैस, सूर्यशक्ति आदि तो कल्पना से परे थे। उस समय सड़कें बहुत कम थी, जो भी सड़कें थी, उनमें अधिकांश वर्षा के काल में खराब हो जाती थी, क्योंकि वे कच्ची थी। रेलों की स्थापना हो चुकी थी, लेकिन वे सीमित स्थानों तक ही कार्यशील थी। भारत में उस समय बैंक तो थी, लेकिन उनका विकास पूर्ण रूप से नहीं हुआ था। उस समय विज्ञान एवं तकनीकी का भी उपयोग भारतीय उद्योगों एवं कृषि में नहीं हो रहा था। जहाँ तक सामाजिक मद की बात है, इसकी शुरूआत तो हो चुकी थी, लेकिन यह उपेक्षित था। जहाँ तक भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की योगदान की बात है वो न के बराबर थी स्वतंत्रता प्राप्ति के समय। मगर वर्तमान समय देश की आधी आबादी (अर्थात्) महिलाओं का योगदान भारतीय अर्थव्यवस्था में सराहनीय है।

***यू0 जी0 सी0 नेट अर्थशास्त्र**

भारतीय अर्थव्यवस्था लगभग छह दशकों से विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रही है। इस अवधि में कुछ गहन परिवर्तन हो चुके है जिनसे ज्ञात होता है कि अर्थव्यवस्था के आधारभूत तत्व मजबूत है। वर्तमान समय में भारत अब पूर्ण रूप से विश्व की तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं का हिस्सा बन गया है।

भारत की अर्द्धविकसित अर्थ व्यवस्था की वृद्धि की प्रक्रिया ठीक प्रकार से अप्रैल, 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना की शुरूआत से प्रारंभ हुई। प्रथम योजना एक साधारण योजना थी। इसका उद्देश्य अधिकांशतः अर्थव्यवस्था में स्थिरता को पुनः प्राप्त करना था। वृद्धि की सम्यक् रूप से निर्मित व्यूहरचना का प्रारंभ द्वितीय पंचवर्षीय योजना से हुआ। बाद की योजनाओं ने प्राथमिक रूप से इस व्यूहरचना की प्रमुखता दी यद्यपि अर्थव्यवस्था की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधन भी किये गये। पहले की योजनाओं का उद्देश्य अधिकांशतः अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता का निर्माण करना था, तीव्र गति से वृद्धि नहीं। इस व्यूह रचना ने वृद्धि की दर एवं वृद्धि की संरचना दोनों को ही प्रभावित किया। 1980 के दशक की अवधि में व्यूहरचना, वृद्धि की दर एवं संरचना में परिवर्तन हुआ। 1990 के दशक की अवधि में वृद्धि की एक नई व्यूहरचना अपनाई गयी जिसके परिणामस्वरूप 1915–1975 की अवधि में वृद्धि दर 3.5 प्रतिशत से बढ़कर 1975–1990 की अवधि में 5.5 प्रतिशत, 1990–2005 की अवधि में 6.5 प्रतिशत तथा 2005–2012 की अवधि में और अधिक बढ़कर 7 प्रतिशत हो गयी। व्यूहरचना एवं राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर में परिवर्तन ने अर्थव्यवस्था की संरचना को प्रभावित किया।

दरअसल किसी भी देश की अर्थव्यवस्था उस देश के सम्पूर्ण घरेलू उत्पाद (GDP) पर निर्भर करती है। जिसमें प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक तीनों क्षेत्रों का योगदान रहता है। इन तीनों क्षेत्रों में यानि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहे जाने वाला GDP में महिलाओं का भी योगदान सराहनीय रहा है। एक अर्थव्यवस्था की GDP की संरचना विभिन्न उत्पादक क्षेत्रों के सापेक्षिक महत्व की व्याख्या करती है। जब एक देश अल्प विकास की स्थिति में होता है तो प्राथमिक क्षेत्र (कृषि एवं सहयोगी व्यवसाय) राष्ट्रीय आय में सर्वाधिक योगदान करता है जैसे–जैसे देश में वृद्धि होती है वह विकसित होता जाता है। औद्योगिक एवं सेवाओं के क्षेत्र में धीरे–धीरे वृद्धि होती है। वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ी हुई वृद्धि का लगभग दो–तिहाई भाग तृतीयक क्षेत्र से प्राप्त होता है। दरअसल भारत बढ़ती हुई श्रम शक्ति को आत्मसात कर सकें। साथ ही अकुशल एवं अशिक्षित ग्रामीण

समूह प्राथमिक क्षेत्र में संघर्ष करते रहे है तथा जिन्हें आर्थिक–सामाजिक एवं राजनीतिक तत्वों के कारण मजबूरन बाहर जाना पड़ा है। इसके अतिरिक्त भारत में GDP में तृतीयक क्षेत्र (सेवा क्षेत्र) में तेजी से वृद्धि हुई है। यानि भारत के GDP में सबसे अधिक भागीदारी तृतीयक क्षेत्र यानि सेवा क्षेत्र का है। परन्तु वृद्धि का यह ढ़ाँचा धरातलीय नहीं होने के कारण देश में निर्धनता, बेरोजगारी तथा विनिर्माण, आदि गतिविधियों में वृद्धि कर रहा है। दरअसल सेवा क्षेत्र में एक स्कील फूल व्यक्ति की जरूरत होती है, जिसकी हमारे प्राथमिक क्षेत्र में लगे लोगों में कमी रहती है। अतः जब तक प्राथमिक एवं द्वितीयक क्षेत्र के श्रम शक्ति को सेवा क्षेत्र में रोजगार अधिक से अधिक नहीं मिलेगी, हमारा देश विकासशील से विकसित नहीं हो पायेगी और अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के लिए महिला एवं पुरुष दोनों को समान समझकर समान अवसर प्रदान करना होगा और वर्तमान समय में महिलाओं का योगदान प्राथमिक से लेकर सेवा क्षेत्र यानि देश की अर्थव्यवस्था में सराहनीय है।

भारतीय समाज में महिलाओं का स्थान सर्वोपरि है। वे राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाती है। जब तक महिलाएँ राष्ट्रीय विकास की धारा में अपनी सक्रिय भूमिका तथा भागीदारी नहीं निभाएंगी, तब तक राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाएँ अग्रणी भूमिका निभाती आई है। कृषि कार्य और उच्च बचत दर निर्माण सहित आर्थिक, गतिविधियों के विस्तृत दायरे में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। हाल तक भारत की विकास दर उच्च रही है और इसका कारण बचत और पूँजी निर्माण की उच्च दर है। भारत में बचत दर सकल घरेलू उत्पाद का 33 प्रतिशत है, जिसमें 70 प्रतिशत घरेलू बचत और 20 प्रतिशत निजी क्षेत्र की बचत तथा 10 प्रतिशत सार्वजनिक क्षेत्र की बचत का योगदान है। बचत उपभोग–अभिवृत्ति और पुनर्चकरण–प्रवृति के मामले में कोई संदेह नहीं है कि भारत की अर्थव्यवस्था महिला केन्द्रित है। कृषि उत्पादन में महिलाओं की औसत भागीदारी का अनुमान कुल श्रम का 55 प्रतिशत से 66 प्रतिशत तक है। डेयरी उत्पादन में महिलाओं की भागीदारी कुल रोजगार का 94 प्रतिशत है। वन–आधारित लघु स्तरीय उद्यमों में महिलाओं की संख्या कुल कार्यरत श्रमिकों का 54 प्रतिशत है। ग्रामीण महिलाओं को श्रम के मामले में दोहरी भूमिका का निर्वहन करना होता है। उनकी एक भूमिका परिवार की भोजन और अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने की होती है तो दूसरी और उन्हें जरूरत पड़ने पर खेती के कार्यों में सहयोग देना होता है। शहरों में रहने वाली महिलाओं की श्रम के क्षेत्र में भूमिका भिन्न है। यहाँ पर मोटे तौर पर श्रमिक महिला और घरेलू महिला

के दो वर्ग है। यह प्रश्न सामने आता है कि आने वाले समय में थर्ड बिलियन यानी दुनिया की तीन अरब महिलाएँ किस प्रकार की भूमिका निभाएंगी और दुनिया की सरकारी एवं पूंजीवादी संस्थाएँ उन्हें संरक्षण और प्रोत्साहन देंगी या फिर उनके मार्ग को रोकने की कोशिश करेंगी। पिछले दिनों अंतर्राष्ट्रीय परामर्श एवं प्रबंधन संस्था 'बूज एंड कंपनी' ने 'थर्ड बिलियन इंडेक्स' नाम की अपनी एक शोध रिपोर्ट में निष्कर्ष निकाला है कि अगले एक दशक में दुनिया के कुल कार्यबल में एक अरब महिलाएँ शामिल होंगी लेकिन आर्थिक सशक्तीकरण तथा पेशेवर सफलता के मामले में उनके सामने काफी चुनौतियाँ भी आएँगी। थर्ड बिलियन शब्द विकासशील और औद्योगिक देशों की उन महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है जो 2020 में वैश्विक अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता, उत्पादन कर्मचारी और उद्यमियों का स्थान ग्रहण कर पहली बार अर्थव्यवस्था की मुख्य धारा में शामिल होंगी। कम से कम भारत और चीन की अर्थव्यवस्थाओं पर इन महिलाओं का प्रभाव महत्वपूर्ण तरीके से पड़ने की आशा की जा सकती है क्योंकि इन देशों में इनकी आबादी लगभग एक अरब से अधिक है। दरअसल भारत की अर्थव्यवस्था में सूचना प्रौद्योगिकी के दृष्टतम उपयोगकर्ता के रूप में महिलाओं की भूमिका में दिनों दिन विस्तार होता जा रहा है। एयरलाइंस एक बड़ा सेवा क्षेत्र है जिसमें महिलाओं को अच्छा व्यक्तित्व, संचार कौशल और कंप्यूटर योग्यता के साथ प्राथमिकता मिलती है। बैंकिंग प्रौद्योगिकी के माध्यम से क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, एटीएम, वेस्टर्न मनी ट्रांसफर, टेलर प्रणाली और ई–बैंकिंग प्रणालियाँ तेजी से विकसित हुई है। इन कार्यों को आज भारत की महिलाएँ कम्प्यूटर अनुप्रयोगों के साथ संभव बना रही है। इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में आईटी के जरिए महिलाओं के लिए अवसरों में बढ़ोतरी हुई है। मोबाईल फोन, इन्टरनेट आदि की सुविधा के साथ अन्य सेवाओं में भी महिलाओं की मांग अत्याधिक बढ़ रही है। मेडिकल ट्रांस्क्रिप्सन सेवा क्षेत्र पिछले कुछ वर्षों में उभरा है। इसमें मुख्य रूप से महिलाओं की इलाज और संबंधित चिकित्सा शर्तों को समझाती है। ई–पुस्तकों में नए कैरियर, ई–पत्रिकाएँ, ई–प्रकाशन और वेब डिजाइन वर्तमान परिदृश्य में लोकप्रिय है जहाँ महिलाओं की संख्या और उनकी भूमिका तेजी से बढ़ी है। थर्ड बिलियन इंडेक्स रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि महिलाओं के रोजगार की दर पुरुषों की रोजगार दर के सामान हो तो भारत के सकल घरेलू उत्पादन में 27 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है। विदित है कि महिलाओं और पुरुषों की रोजगार–दर में समानता लाकर संयुक्त अरब अमीरात और मिस्र सरीखी विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ अपने सकल घरेलू उत्पाद में क्रमशः 42 और 34 प्रतिशत की वृद्धि कर सकती है। कमोवेश ऐसा ही विकसित देशों (भारत आदि देशों) की अर्थव्यवस्था के साथ भी हो सकता है। महिलाओं की

रोजगार दर को पुरुषों की रोजगार दर के समान लाकर अमेरिका की अर्थव्यवस्था 5 प्रतिशत और जापान की अर्थव्यवस्था 9 प्रतिशत की दर से वृद्धि कर सकती है। अर्थव्यवस्था के दरवाजे के बारह खड़ी भारतीय महिलाओं की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि ''अधिकांश भारतीय महिलाओं को पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधा, सामाजिक सेवा, परिवहन तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त नहीं है। अगर भारत अपनी महिला जनसंख्या को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना चाहता है तो उसे इन बुनियादी समस्याओं को समाधान करना चाहिए। हालाँकि भारत में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए अच्छा–खासा जोर दिया गया है लेकिन भारत में विनिर्माण का क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है और इसके लिए व्यावसायिक रूप से दक्ष लोगों की आवश्यकता है, जबकि देश की शिक्षा व्यवस्था इस मामले में मांग के अनुरूप पूर्ति नहीं कर पा रही है।'' साथ ही नए और अन्य उभरते हुए क्षेत्रों में भारत की महिलाओं को मुख्य धारा में लाना अनिवार्य है। इसके लिए संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण और कौशल आवश्यक होगा इससे इन क्षेत्रों में महिलाओं को व्यावसायिक शिक्षा और रोजगार के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। इसके लिए यह भी आवश्यक होगा कि कार्य के लिए महिलाओं को शहरों और महानगरों में आने के लिए प्रवृत्त किया जाए। सुरक्षित आवास तथा कार्यस्थल पर लिंगभेद रहित सुविधाएँ प्रदान करना भी आवश्यक होगा। ताकि भारतीय जमीनी स्तर से प्रारंभ हो सके।

किसी देश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी बहुत मायने रखती है। साथ ही किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के उत्थान में उस देश के प्राकृतिक संसाधनों का भी बहुत महत्व होता है। यही वह संपदा है जो रोजगार बढ़ाने और देश की अर्थव्यवस्था को आसमान पर पहुँचा सकती है। प्राकृतिक संसाधनों के मामले में हमारा देश पीछे नहीं है लेकिन कमी है तो इन संसाधनों के इस्तेमाल में महिलाओं की भागीदारी की। इसके लिए हमें कई प्रकार के प्रयास करना चाहिए। जैसे–सकारात्मक आर्थिक और सामाजिक नीतियों के माध्यम में महिलाओं के विकास के लिए ऐसा वातावरण बनाना जो उन्हें पूर्ण क्षमता का अनुभव करने के लिए सक्षम बनाए। देश के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में सहयोग तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की समान भागीदारी होनी चाहिए, विकास और प्रक्रिया में लिंग दृष्टिकोण को मुख्यधारा में लाना इत्यादि।

दरअसल सकल घरेलू उत्पाद में महिलाओं के योगदान के मामले में वैश्विक औसन 37 प्रतिशत की तुलना में भारत में महिलाओं का योगदान मात्र 17 प्रतिशत है। यदि भारत की महिलएँ भी पुरुषों के समान अर्थव्यवस्था में भागीदारी करें तो इससे वर्ष 2025 तक भारत की वार्षिक GDP यानि अर्थव्यवस्था में 2.9

ट्रिलियन डॉलर की वृद्धि हो सकती है। केवल 14 प्रतिशत भारतीय व्यवसाय महिलाओं द्वारा संचालित है। कृषि श्रम की बात करें तो कृषि श्रम में महिला कृषकों की संख्या 38.87 प्रतिशत है, लेकिन अभी तक भारत में केवल 9 प्रतिशत भूमि पर उनका नियंत्रण है, जबकि 60 प्रतिशत महिलाओं के नाम पर भूमि या आवास जैसी कोई मूल्यवान संपत्ति नहीं है।

उपर्युक्त बातों द्वारा यह कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र के अर्थव्यवस्था के विकास में उस राष्ट्र की महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण होता है। इसलिए भारत की महिलाओं के समक्ष विद्यमान निराशाजनक आर्थिक असमानता के परिदृश्य में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है क्योंकि वे अर्थव्यवस्था में सबसे अधिक योगदान दे सकती है। भारत की महिलाओं की क्षमताओं को उजागर किये जाने से ही भारत की आर्थिक क्षमता को पूर्ण रूप से साकार किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रो0 विजयपाल सिंह एवं बी0 के0 गुप्ता, श्रम समस्याएँ एवं समान कल्याण, विशाल प्रकाशन, मेरठ, 1995–96
2. कुरूक्षेत्र, मार्च 1998
3. रवीन्द्र नाथ मुखर्जी एवं भरत अग्रवाल भारतीय सामाजिक संगठन, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 1995
4. योजना, मार्च 1998
5. ईश्वर, सी0 ढ़िंगरा – द इंडियन इकॉनामी इनथायरोमेंट एण्ड पॉलिसी–2012